भारत में नगरीकरण की प्रवृत्ति, प्रभाव एवं समस्याएँ

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIII, January-2014, ISSN 2230-7540

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIII, January-2014, ISSN 2230-7540

भारत में नगरीकरण की प्रवृत्ति, प्रभाव एवं समस्याऐं

Dr. Ashish Shukla*

Lecturer, Department of Geography, B.S.R. Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan

शोध सारांश – *शहरीकरण विकास प्रक्रिया का एक हिस्सा है। ग्रामीण क्षेत्र शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या का परिवर्तन आर्थिक विकास का एक मजबूत मापदंड है। पिछड़े हुए स्थिर समाज में, शहरीकरण की प्रक्रिया लगभग धीमी है क्योंकि शहर ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए रोजगार देने में सक्षम नहीं हैं। हालांकि, शहरों में ग्रामीण आबादी का तेजी से पलायन केवल रोजगार पाने के उद्देश्य से है और इस स्थिति में पूंजी गहन उद्योगों के बजाय श्रम गहन उद्योगों पर जोर दिया जाता है। इसके विपरीत, शहरीकरण की गति धीमी हो जाती है जब कुल जल स्तर के अनुपात में शहरी आबादी बहुत उच्च स्तर तक पहुंच जाती है। यह स्थिति कुल 30 देशों में सामने आई है, जिन्हें विकसित औद्योगिक देश कहा जाता है। विवरण शहर क्षेत्रों के भौतिक विस्तार या इसके क्षेत्र, जनसंख्या आदि में वृद्धि को 'शहरीकरण' कहा जाता है। यह एक वैश्विक बदलाव है। इस शोध पत्र में, 1901 से 2011 तक भारत में शहरीकरण की प्रवृत्ति, शहरीकरण का प्रभाव, शहरों की समस्याओं का भौगोलिक अध्ययन।*

मुख्य शब्द:- *नगरीकरण की विशेषताएं, भारत में नगरीकरण, भारत में नगरीकरण की प्रवृत्ति, नगरीकरण के प्रभाव एवं समस्याऐं।*

----------X----------

परिभाषा:

संयुक्त राष्ट्र की परिभाषा के अनुसार:- "शहरों में रहने और काम करने वाले ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों का शहरीकरण भी "शहरीकरण है।"

भारत में शहरीकरण के कारण, रेलवे का विकास, अकाल, शहरी जीवन का आकर्षण, उद्योगों का विस्तार, शहरों में स्थायी रोजगार आदि।

दस लाख से अधिक जनसंख्या वाले शहर (2011, भारत) मेरठ, नासिक, जबलपुर, जमशेदपुर, आसनसोल, धनबाद, फरीदाबाद, इलाहाबाद, अमृतसर, विजयवाड़ा और राजकोट, श्री नगर, कोलकाता, कोच्चि, कोयम्बटूर, आगरा, इंदौर, गाजियाबाद, भोपाल , जयपुर, जोधपुर, दिल्ली बैंगलोर, ठाणे, मदुरै आदि।

विशेष: - 2001 की जनगणना के अनुसार, भारत में सबसे अधिक आबादी वाला शहर मुंबई है, जिसकी जनसंख्या 1 करोड़, 2001 में 24 लाख थी, जो 2011 में बढ़कर 1 करोड़ 84 लाख हो गई।

अध्ययन क्षेत्र:

भारत दुनिया के सबसे बड़े देशों में से एक है। भारत का अक्षांशीय विस्तार 08 डिग्री 04 मिनट से 37 डिग्री 06 मिनट उत्तर और 68 डिग्री 07 मिनट से 97 डिग्री 25 मिनट पूर्व में है। भारत का कुल क्षेत्रफल - 32,87,263 वर्ग किमी उत्तर (जम्मू और कश्मीर) से दक्षिण (कन्याकुमारी) तक है, भारत की कुल लंबाई 3,214 किलोमीटर है जबकि भारत की चैड़ाई पूर्व (अरुणाचल प्रदेश) से पश्चिम (गुजरात) तक है। 2,922 किमी। भारत की कुल भूमि सीमा 15,200 किमी है जबकि तटीय रेखा 7,516 किमी है।

उद्देश्यः

प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य इस प्रकार हैं।

1. भारत के शहरों के वर्तमान स्वरूप का अध्ययन किया गया है।
2. भारतीय शहरों की विशेषताओं और नगरीकरण की प्रवृत्ति को स्पष्ट किया गया है।
3. भारत के शहरों की समस्याओं एवं नगरीकरण के प्रभावों का अध्ययन किया गया ।

www.ignited.in

परिकल्पनाः

1. वर्तमान में शहरों में शहरीकरण की समस्याएं लगातार बढ़ रही हैं।

2. वर्तमान में, शहरों के विकास और संरक्षण के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

आँकड़ो का संग्रहण:

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक और द्वितीयक डेटा का उपयोग किया गया है। डेटा का संकलन प्रश्नावली, कार्यक्रम, व्यक्तिगत संपर्क, डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और विभिन्न वेबसाइटों और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

नगरीकरण की विशेषताएं:

1. बड़े शहरों में उद्योगों का केंद्रीकरण दिखाई दे रहा है।

2. शहरीकरण शहर बनने की प्रक्रिया है।

3. शहरीकरण की प्रक्रिया में, नए शहर बनते हैं और महानगरों का जन्म होता है।

4. कम जगह में ज्यादा लोग रहते हैं।

5. शहरीकरण की प्रक्रिया के दौरान, शहरों में रहने वाले लोग शहरी जीवन शैली को आत्मसात करते हैं।

6. शिक्षितों की संख्या का अनुपात ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक है।

7. अनौपचारिक रिश्ते औपचारिक संबंधों में परिलक्षित होते हैं।

9. विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों के लोग एक साथ रहते हैं।

10. औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया शुरू होती है।

भारत में नगरीकरण:

20 वीं सदी की पहली छमाही भारत के लिए आर्थिक ठहराव की अवधि रही है। परिणामस्वरूप, शहरीकरण की गति बहुत अधिक नहीं थी। 1911 में कुल शहरी आबादी केवल 11 प्रतिशत थी, जो 1941 में बढ़कर 14 प्रतिशत हो गई। इस प्रकार, शहरी आबादी की वृद्धि 30 वर्षों में केवल 3 प्रतिशत थी। 1951 की जनगणना में शहरी आबादी कुल जनसंख्या का 17.3 प्रतिशत थी। इस वृद्धि का कारण वास्तविक नहीं था, बल्कि अधिक संख्यात्मक था, क्योंकि 1951 की जनगणना ने शहर की बहुत उदार परिभाषा को अपनाया था। 1961 में, शहर की परिभाषा को फिर से कस दिया गया था। इसलिए, 1951-9161 के बीच शहरी आबादी में केवल 0.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। इस प्रकार 1961 में शहरी आबादी कुल जनसंख्या का 18 प्रतिशत हो गई। 1971 में अपनाए गए शहरी क्षेत्र की परिभाषा के अनुसार, एक क्षेत्र को शहर क्षेत्र होने के लिए निम्नलिखित शर्तों को पूरा करना होगा -

1. स्थान नगर निगम, नगर निगम, छावनी या अनुसूचित नगर क्षेत्र होना चाहिए।

2. अन्य सभी स्थानों के लिए न्यूनतम जनसंख्या 5,000 होनी चाहिए।

3. कम से कम 75 प्रतिशत पुरुष कामकाजी आबादी को गैर-कृषि गतिविधियों में संलग्न होना चाहिए।

4. जनसंख्या घनत्व कम से कम 400 व्यक्ति वर्ग किमी होना चाहिए।

1971 की जनगणना में दिए गए शहर के क्षेत्र की परिभाषा कुछ हद तक दृढ़ है, लेकिन अन्य देशों की तुलना में यह परिभाषा अभी भी काफी अच्छी है। उदाहरण के लिए - जापान में, 30,000 से अधिक की आबादी वाले स्थानों को शहर माना जाता है। इसके बावजूद, भारत में शहरी आबादी की परिभाषा कुल जनसंख्या का 23.3 प्रतिशत थी, जो 1991 में बढ़कर 25.7 प्रतिशत हो गई। जनगणना के अनुसार, 2001 तक, भारत की 27.81% आबादी शहरों में रहती थी। 2011 तक, यह 31.16% था।

भारत में, औद्योगीकरण की प्रक्रिया दूसरी योजना में ही शुरू हुई, लेकिन शहरी आबादी में वृद्धि तीसरी योजना तक कुछ खास नहीं हो पाई। यह ज्ञात है कि भारी औद्योगीकरण की नींव दूसरी और तीसरी योजना में रखी गई थी लेकिन इसने भारी और बुनियादी उद्योगों पर विशेष जोर दिया। भारी और बुनियादी उद्योग पूंजी प्रधान हैं। इस प्रकार, उनकी रोजगार क्षमता काफी सीमित है। यही कारण है कि उनका विकास गांवों में उत्पन्न जनशक्ति को अवशोषित नहीं कर सका, जिसके कारण अर्थव्यवस्था प्रभावित नहीं हुई। इसलिए, औद्योगीकरण की प्रक्रिया जो शुरू की गई थी, उसमें तेजी नहीं लाई जा सकी। परिणामस्वरूप, तेजी से औद्योगिकीकरण नहीं हो सका। इसके अलावा, 1971 की

जनगणना में शहरी क्षेत्र की अधिक सख्त परिभाषा के कारण, शहरीकरण में प्रतिशत वृद्धि भी कम हो गई थी।

भारत में नगरीकरण की प्रवृत्ति:

संयुक्त राष्ट्र की एक नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, वर्तमान में दुनिया की आधी आबादी शहरों में रह रही है और 2050 तक भारत की आधी आबादी महानगरों और शहरों में रहने लगेगी। भारत में शहरीकरण तेजी से बढ़ रहा है और तब भी विश्व स्तर पर कुल आबादी का 70% शहरों में रह रहा होगा।

आंकड़ों के मुताबिक, 2001 तक, भारत की 27.81% आबादी शहरों में रहती थी। 2011 तक, यह 31.16% था। मुंबई महानगर भारत में सबसे बड़ी शहरी आबादी है। मुंबई की जनसंख्या 2001 में 1 करोड़ 24 लाख थी जो 2011 में बढ़कर 1 करोड़ 84 लाख हो गई। दिल्ली की जनसंख्या 1 करोड़ 10 लाख से बढ़कर 1 करोड़ 63 लाख हो गई। इसी तरह, बेंगलुरु की शहरी आबादी 2001 में 84 लाख 43 हजार थी, जो 2011 में बढ़कर 84 लाख 99 हजार हो गई। चेन्नई की जनसंख्या 80 लाख 46 हजार से बढ़कर 86 लाख 96 हजार हो गई। हैदराबाद की जनसंख्या 67 लाख 31 हजार से बढ़कर 77 लाख 49 हजार हो गई। अहमदाबाद की जनसंख्या 55 लाख 77 हजार से बढ़कर 63 लाख 52 हजार हो गई। इसी तरह, 2001 से 2011 के बीच पुणे की जनसंख्या 31 लाख 24 हजार से बढ़कर 50 लाख 49 हजार हो गई।

भारत में शहरीकरण की जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। शहरी आबादी जो 1901 में 2 करोड़ 56 लाख थी, 1951 में बढ़कर 6 करोड़ 24 लाख हो गई। इस प्रकार 1901 में यह 2 करोड़ 56 लाख हो गई, यह 1951 में बढ़कर 6 करोड़ 24 लाख हो गई। इस प्रकार, 1901 और 1951 के बीच, शहरी आबादी 3.68 मिलियन की वृद्धि हुई। जबकि 1951 और 1981 के बीच, शहरी आबादी में 91.71 मिलियन की वृद्धि हुई। इसी तरह, 1981-1991 के बीच शहरी आबादी 5 करोड़ 77 लाख बढ़ गई। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि औद्योगीकरण से शहरी आबादी में आवश्यक वृद्धि हुई है, भले ही विकास धीमा हो। 2001 की जनगणना के अनुसार, शहरी आबादी 28.53 मिलियन थी जो कुल आबादी का 27.8 प्रतिशत है।

1901 और 2011 के बीच भारत में नगरीकरण की प्रवृत्ति:

1 लाख से अधिक आबादी वाले प्रथम श्रेणी के शहरों में शहरी आबादी का अनुपात, जो 1901 में 25.7 प्रतिशत से बढ़कर 65.2 प्रतिशत हो गया, यह दर्शाता है कि शहरी आबादी का रुझान बड़े शहरों में केंद्रित होने जा रहा है। दूसरे और तीसरे श्रेणी के शहरों में, शहरी आबादी का सापेक्ष अनुपात लगभग 1901 और 2001 के बीच था, यह 25-28 प्रतिशत था। लेकिन तुलना में, कक्षा IV, V और VI श्रेणी के शहरों में जनसंख्या के सापेक्ष अनुपात में तेज कमी आई और 1901 में 47.2 प्रतिशत से घटकर 1991 में केवल 11.7 प्रतिशत हो गई। 2011 में भारत में कुल शहरी जनसंख्या का प्रतिशत बढ़कर 31.16 हो गया।

प्रथम श्रेणी के शहर प्रशासनिक और सामान्य आर्थिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में विकसित हुए। उद्योग, परिवहन, व्यापार और वाणिज्य और प्रशासनिक और उदार सेवाएं भी इन शहरों में केंद्रित हैं। इस श्रेणी के शहरों में जनसंख्या की एकाग्रता का कारण यही है। इसके अलावा, जो शहर दूसरी श्रेणी की ऊपरी सीमा तक पहुंच गए हैं, वे प्रथम श्रेणी में प्रवेश करते हैं। इसके प्रमाण में, यह कहा जा सकता है कि 1951 में, जहां 74 शहर पहली श्रेणी में थे, 1991 में उनकी संख्या बढ़कर 296 हो गई, जो 1951 के सापेक्ष लगभग तीन गुना है। नतीजतन, 1951 में 275 लाख लोग थे प्रथम श्रेणी के शहरों में रहते हुए, जबकि 1991 में उनकी संख्या बढ़कर 1388 लाख हो गई, यानी यह 405 प्रतिशत बढ़ गई। इसी तरह, 2001 की जनगणना में शहरों और कस्बों की कुल संख्या 5161 थी, जो 2011 में बढ़कर 7936 हो गई।

नगरीकरण के प्रभाव:

1. ग्रामीण जीवन पर प्रभाव:

शहरीकरण ने ग्रामीण जीवन को प्रभावित किया है। शहर की सुविधाओं और उद्योग उन्मुख व्यवसायों, शिक्षा आदि के लिए ग्रामीण शहर की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

2. जीवन में कृत्रिमता:

शहरीकरण के कारण आज जीवन में वास्तविकता नहीं है। शहरीकरण से पहले, मानव उच्च विचारों के 'सरल जीवन' में विश्वास करता था, लेकिन इसका झुकाव कृत्रिमता की ओर है। कृत्रिमता अब मानव जीवन में आ गई है, अब उसने उपस्थिति और लालित्य में अधिक विश्वास करना शुरू कर दिया है।

3. सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन:

शहरीकरण के परिणामस्वरूप, सामाजिक मूल्य अब बदल रहे हैं। यह शहरीकरण का एक सामाजिक प्रभाव है। व्यक्तिवादी जीवन मूल्यों में सामूहिकता की भावना लगातार कम हो रही है।

www.ignited.in

जीवन में नैतिकता और विश्वास की कमी है और स्वार्थ की भावना बढ़ रही है।

4. धार्मिक जीवन पर प्रभाव:

शहरीकरण का धार्मिक जीवन पर भी व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। धार्मिक मान्यताएं, परंपराएं, रीति-रिवाज आदि एक तरह से बदल गए हैं। अब अंधविश्वास को जन्म देने वाले तत्वों को खत्म किया जा रहा है। शिक्षा की मदद से, वैज्ञानिक और तर्कसंगत सोच अब विकसित हो रही है।

5. मनोरंजन का व्यवसायीकरण:

ग्रामीण समाज में मनोरंजन का उद्देश्य कभी पैसा नहीं रहा है, ग्रामीण समाज में मनोरंजन का उपयोग तनाव को दूर करने और एक साथ बैठने के लिए किया जाता है। लेकिन शहरीकरण में मनोरंजन का उद्देश्य पैसा रहा है।

6. महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन:

शहरीकरण के प्रभावों के कारण महिलाओं की स्थिति बदलने लगी है। वह अब घर के अंदर अपनी यौन भूमिकाओं तक सीमित नहीं है। आर्थिक रूप से, बल्कि वह आत्मनिर्भर होने लगी है। अब शिक्षा और राजनीति जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है।

7. हमारी कमी महसूस करना:

शहरीकरण के कारण अब हम भावना में कम होने लगे हैं। नागरिकायन ने व्यक्तिवाद को जन्म दिया है। हर कोई केवल अपने हित के बारे में सोचता है।

8. सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन:

शहरीकरण के प्रभाव के कारण, परिवार और विवाह में निरंतर परिवर्तन होता है। अब संयुक्त परिवार प्रणाली एकल परिवार प्रणाली में बदल रही है। शहरीकरण के प्रभावों के कारण, व्यक्तिवादी सोच बढ़ने लगी है।

9. सेवा क्षेत्रों का विकास:

शहरीकरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप शहरी आबादी के प्रबंधन के लिए सेवा क्षेत्रों का विकास हुआ है। कई प्रकार की सरकारी और गैर-सरकारी सेवाओं में वृद्धि की गई, जैसे; अस्पताल, पुलिस, अदालतें, शैक्षणिक संस्थान, गैर-सरकारी संस्थान आदि।

नगरीकरण की समस्या:

स्वास्थ्य समस्याएं और शहरीकरण:

तेजी से शहरीकरण और बढ़ती शहरी आबादी को स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान की दिशा में बड़ी चुनौतियों के रूप में देखा गया है। यह अनुमान है कि 1990 और 2025 के बीच विकासशील देशों में शहरी आबादी तीन गुना बढ़ गई होगी और

यह कुल आबादी का 61 प्रतिशत हो जाएगा। इस बढ़ती शहरी आबादी के मद्देनजर स्वास्थ्य संबंधी कई चुनौतियों जैसे पानी, पर्यावरण, हिंसा और चोट, गैर-संचारी रोगों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, तंबाकू के उपयोग, अस्वास्थ्यकर आहार, शारीरिक निष्क्रियता और महामारी के प्रकोप से जुड़े जोखिम और खतरे कम चुनौतीपूर्ण नहीं हैं।

पर्यावरणीय चुनौती:

पर्यावरण संरक्षण के मद्देनजर शहर एक बड़ी चुनौती बनते जा रहे हैं क्योंकि शहर के विकास के लिए हरित क्षेत्र की बलि दी जा रही है। जलवायु परिवर्तन ने कई शहरों के अस्तित्व को चुनौती दी है, खासकर समुद्र तटीय शहर अब मानव निर्मित आपदाओं से अछूते नहीं हैं। इसके अलावा, तेजी से तकनीकी विकास शहरों में कई पारंपरिक व्यापारिक समूहों के लिए खतरा बन जाता है क्योंकि यह पर्यावरण को भी नुकसान पहुंचाता है।

शहरों में बढ़ती झुग्गी बस्तियाँ:

देश के सभी प्रमुख शहरों और महानगरों में बड़ी संख्या में झुग्गी बस्तियों का गठन किया गया है। उनमें रहने वाले लोग शहरी आबादी से संबंधित उच्च और मध्यम वर्ग की कई जरूरतों को पूरा करते हैं, लेकिन वे न केवल गरीबी के शिकार हैं, बल्कि बुनियादी सुविधाओं से भी वंचित हैं।

यातायात की समस्या:

हर शहर में बेतरतीब यातायात एक गंभीर समस्या बन गई है क्योंकि सार्वजनिक परिवहन सेवाएं लगभग समाप्त हो गई हैं। शहर में रहने वाले अमीर लोग अपनी शक्ति और समृद्धि का प्रदर्शन करने के लिए यातायात नियमों का उल्लंघन करते हैं और इससे बड़ी संख्या में सड़क दुर्घटनाएं होती हैं।

कुछ अन्य समस्याएं: -

हमारे देश का लगभग हर शहर सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित है। निजीकरण और स्वास्थ्य सेवाओं के व्यावसायीकरण ने शहरों में असमानता पैदा कर दी है।

शहरों की सड़कों पर गड्ढे, सीवर प्रणाली की कमी और जल भराव, बिजली, पानी और संचार सुविधाओं के अव्यवस्थित रूप के कारण समस्याएं शहरी जीवन को इतना अधिक समस्याग्रस्त बना देती हैं कि मात्र कई शहरों में जाने के बारे में सोचा जाना दूभर हो जाता है।

शहर भी तुलनात्मक रूप से अपराध से अधिक असुरक्षित हैं ... कंक्रीट के जंगल में रहने वाले लोग अपने पड़ोसी को भी नहीं जानते हैं।

भावनात्मकता, संचार की खाई और विषयगतता शहरी आबादी के जीवन का हिस्सा बन गई है।

नवउदारवाद और वैश्वीकरण के बाद, गाँव अब केवल खाद्य, श्रम और कच्चे उत्पादों के आपूर्तिकर्ता बन गए हैं। शहर आधुनिकीकरण और उपभोक्तावादी सभ्यता को दर्शाते हैं और अधिकांश गांव अपने अस्तित्व के लिए इन शहरों से जुड़े हुए हैं। शहरीकरण, औद्योगीकरण, सामाजिक गतिशीलता और प्रवासन की प्रक्रिया में वृद्धि हुई है और एक नई पीढ़ी ने गांवों से शहरों की ओर पलायन करना शुरू कर दिया है।

निष्कर्ष:

इस तरह हम देखते हैं कि भारत में बढ़ते शहरीकरण के कारण कई समस्याएं पैदा हुई हैं। इन समस्याओं के पीछे मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या है। भारतीय शहरों में पुरानी परंपरा के अनुसार, परिवारों के लिए रहना बहुत मुश्किल है क्योंकि आधुनिक समय में तेजी से और मूलभूत परिवर्तन हो रहे हैं। पुरानी परंपरा कृषि समाज के अनुसार है। शहरी परंपरा और ग्रामीण परंपरा में इसका तीव्र विरोध है। यह स्वाभाविक है कि प्रौद्योगिकी और शहरी समाजों में, नए प्रतिमान विकसित होंगे। कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन सी संस्था, संगठन का मुख्य उद्देश्य मानवीय जरूरतों को पूरा करना है। वे संस्थान जो किसी भी समय मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ हैं, वे हैं: यह समाप्त होता है। शहरों के विकास के लिए, सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में कई रोजगार के अवसर पैदा किए हैं - जैसे नेहरू रोज़गार योजना, ट्रिसम, आरएलईजीपी। आदि प्रदान किए गए हैं। इसके साथ ही शहरी बाहरी इलाकों में विकास पोल केंद्र स्थापित करना होगा। शहरी क्षेत्रों में स्थित औद्योगिक प्रतिष्ठानों को भी बाहरी क्षेत्रों में स्थानांतरित किया जाना चाहिए। इससे शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या का दबाव कम होगा और प्रदूषण के स्तर में काफी कमी आएगी। इन उपायों को सफलतापूर्वक लागू करने से ही हम इन समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अधिवास भूगोल, डॉ. रामयज्ञ सिंह, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश
2. सांस्कृतिक भूगोल, डॉ. गायत्री प्रसाद, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश
3. नगरीय भूगोल, डॉ सुरेश चन्द्र बंसल, मिनाक्षी पब्लिकेशन, नई दिल्ली
4. भारत में नगरीय समाज, रिया खत्री, कैलाश पुस्तक भवन, भोपाल, मध्यप्रदेश
5. सामाजिक भूगोल, डॉ. एस. डी. मौर्य, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश
6. नगरीय समाज शास्त्र, डॉ. वी एन सिंह, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, नई दिल्ली
7. G. S. Mohanty, Social and Cultural Geography, New Delhi
8. जनसँख्या भूगोल, डॉ चतुर्भुज मामोरिया, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, उत्तरप्रदेश

Corresponding Author

Dr. Ashish Shukla*

Lecturer, Department of Geography, B.S.R. Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan

www.ignited.in